जनसंपर्क कार्यालय
जामिया मिल्लिया इस्लामिया

24 जनवरी 2024

प्रेस विज्ञप्ति

जामिया सोशल वर्क के छात्रों ने किया फ़रीदाबाद जिला जेल में एंगर मैनेजमेंट पर नुक्कड़ नाटक

जामिया मिल्लिया इस्लामिया के समाज कार्य विभाग के छात्रों को इंडिया विजन फाउंडेशन द्वारा 23 जनवरी, 2024 को फरीदाबाद जिला जेल के महिला वार्ड में नुक्कड़ नाटक करने के लिए आमंत्रित किया गया था। इंडिया विजन फाउंडेशन डॉ. किरण बेदी द्वारा स्थापित एक संगठन है जिसने तीन दशक पहले जेल में बंद व्यक्तियों के जीवन को बदलने और उन्हें समाज में सफल पुनर्एकीकरण की दिशा में उनकी सहायता करने के लिए काम किया था।

'संवेदना का सफर' शीर्षक वाला नुक्कड़ नाटक जेल की 100 महिला कैदियों के बीच प्रस्तुत किया गया, जो अपनी कैद और जेंडर के आधार पर दोहरी मार झेल रही हैं। पुरुष जेल कैदियों के विपरीत, उन्हें अक्सर उनके परिवारों द्वारा छोड़ दिया जाता है और जेल में उनसे मिलने कोई नहीं आता है। जेल से बाहर का भविष्य अनिश्चित है। उनके बच्चे, जो बाहर रहते हैं, उनकी भलाई उनके लिए बड़ी चिंता का विषय बनी हुई है। यह वास्तविकता कि जेल के अधिकांश कैदी विचाराधीन कैदी हैं, उनके लिए भी सच है। अदालत की घोषणा के बिना ही उन्हें दोषी मान लिया जाता है।

अपने नियंत्रण से बाहर की स्थिति से जूझते हुए, महिला जेल कैदियों को क्रोध के विस्फोट का सामना करना पड़ रहा था जो उनकी व्यक्तिगत भलाई के अलावा एकजुटता की भावना के लिए हानिकारक था। इसी संदर्भ में, श्री आगाज खान, वरिष्ठ कार्यकारी, एल एंड डी, इंडिया विजन फाउंडेशन और विभाग के पूर्व छात्र ने, जेएमआई के समाज कार्य विभाग से क्रोध प्रबंधन पर एक नाटक तैयार करने के लिए कहा था। जेल में महिला कैदियों के संदर्भ और गुस्से को भड़काने वाली परिस्थितियों को समझने की प्रक्रिया के माध्यम से, आठ छात्रों (पांच महिला और तीन पुरुष) की एक टीम ने सेटिंग के लिए एक विशिष्ट नाटक की पटकथा लिखी थी। सुश्री नाज़िया नाज़, सहायक प्रबंधक, इनसाइड प्रिज़न प्रोग्राम, इंडिया विज़न फ़ाउंडेशन ने इस दिशा में महत्वपूर्ण अंतर्दृष्टि प्रदान की।

नुक्कड़ नाटक ने जेल के भीतर के परिदृश्यों को सूक्ष्मता से प्रदर्शित किया जिससे क्रोध की भावना उत्पन्न हुई, साथ ही उन संभावित तरीकों पर जोर दिया गया जिनके माध्यम से स्वयं या दूसरों को नुकसान पहुंचाए बिना इन स्थितियों को प्रबंधित किया जा सकता है। नाटक में उन मामलों में संवेदनशील प्रतिक्रियाओं को भी दिखाया गया जहां जेल के कैदी परेशान थे। स्व-निर्मित काव्य छंदों के साथ, यह नाटक दर्शकों के साथ तालमेल बिठाने में सक्षम था। फ़रीदाबाद में जेल परियोजना का समन्वय कर रही इंडिया विज़न फ़ाउंडेशन की सुश्री उषा कुमारी, ने टीम को ज़मीनी स्तर पर बहुत अच्छा समर्थन दिया।

नाटक के प्रदर्शन के बाद महिला जेल कैदियों के साथ गुस्से का सामना करने के दौरान अपनाई जाने वाली रणनीतियों पर एक इंटरैक्टिव सत्र आयोजित किया गया। वे अपने द्वारा अपनाई गई वर्तमान रणनीतियों का सत्यापन चाहती थीं। जेल के कैदियों ने उस छात्र टीम के प्रति गहरी सराहना व्यक्त की जिसने उनके जीवन को समझने और उनके लिए महत्वपूर्ण मुद्दों पर उनसे जुड़ने का प्रयास किया था। जेल की महिला कैदियों ने भी ऐसे गीत गाने का चयन किया जो उनके अस्तित्व के करीब थे और ऐसा करते समय वे बेहद भावुक हो गईं।

छात्रों की टीम में एमएसडब्ल्यू-चतुर्थ सेमेस्टर से मोहम्मद काशफी जिया, अब्रू असलम, हीबा और एमएसडब्ल्यू-2 से मोहम्मद कामरान, मोहम्मद तलहा, अमीषा झा, नेहा यादव और तकदीर हुसैन शामिल थे। संकाय सदस्यों में से मार्गदर्शन डॉ. सारिका तोमर, डॉ. रश्मी जैन और प्रोफेसर नीलम सुखरामनी द्वारा प्रदान किया गया।

इस प्रदर्शन से छात्रों को जेल के कैदियों और जेलों के बारे में अपनी रूढ़िवादिता को तोड़ने में मदद मिली। वे दर्शकों से मिली प्रतिक्रिया से अभिभूत महसूस कर रहे थे और समाज में प्रत्येक व्यक्ति से संबंधित एक मुद्दे पर एक नाटक का मंचन करने में सक्षम होने पर उन्हें संतुष्टि का अनुभव हुआ।

जनसंपर्क कार्यालय
जामिया मिल्लिया इस्लामिया